AEIJMR – Vol 13 – Issue 09 – September 2025 ISSN - 2348 – 6724

उषा प्रियंवदा की कहानियों में टूटते जीवन मूल्यों का चित्रण

शोधार्थि,
रश्मि बी. जे.
हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग,
मुक्तगंगोत्री, मैसूर, कर्नाटक.

मध्यमवर्ग के परिवार के जीवन और उनके समस्याओं को यथार्थ रूप से चित्रित किया गया है। सामाजिक विषमता ,पति-पत्नी के संबंध प्रेम के विविध पक्षों का उद्घाटन उनकी कहानियों में हुआ है। उषा जी की कहानियों का प्रयास एकमात्र वर्तमान जीवन विसंगतियों को वेदना पीड़ा और शून्यता से ग्रस्त हो गया है। उनका जीवन भी विसंगतियों का एक भंडार बन गया है। प्रेम, सील विवाह नैतिकता, त्याग, उदारता, सत्य, दया मूल्य, रूढ़ि समान लगने लगे हैं। ऊषा जी की प्रेम कथा की अनेक कहानियों में मूल्य का विघटन दिखाई देता है।

टूटते सामाजिक मूल्य: मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसी कारण वह परिवार तथा समाज से मूल्य ग्रहण करता है। सामाजिक मूल्य किसी न किसी रूप में समाज में रहते हैं, और एक निश्चित स्वरूप होता है। समाज के पहियों को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने के लिए व्यक्ति और समाज के बीच एक संतुलित वातावरण और सूझबूझ रहती है। सामाजिक मूल्य के अंतर्गत आता है। इसी कारण वह परिवार और समाज से मूल्य ग्रहण करता है।

डॉ लालचंद गुप्त ने लिखा है-"स्त्री पुरुषों के संबंधों प्रेम के विविध पक्षों एवं परिवार की परिवर्तित व्यवस्था को लेकर उषा प्रियंवदा ने भी कासोटी पर सफल कहानी लिखी है।"

पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों में प्रेम संबंध, विवाह संबंध पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण, बिखराव बहुत सी स्थितियां मूल्य विघटित होती है।

विवाह बंधन: 'छुट्टी का दि' कहानी की माया का जीवन भी एक रेतीला मैदान जैसा है, जिसकी कोई छोड़ नहीं है। प्रस्तुत कहानी में पारिवारिक विवाह, सामाजिक मूल्यों का पतन चित्रित किया गया है। विवाह बंधन में बंद कर मनुष्य अकेला है, और ना बंद कर भी अकेला है। 'कच्चे धाग' कहानी में सबसे बड़ी समस्या कुंतल के विवाह की है। वह संपन्न परिवार के युवक के साथ विवाह के सपने देखती है। लेकिन धन अभाव के कारण उसका विवाह नहीं है। अंत में वह अपनी बेबसी पर रो पड़ती है।

’पूर्ति’ कहानी की तारा अविवाहित प्राध्यापिका है। मम्मी के साथ जी रही तारा कृरता के कारण अविवाहित हैं। वह पीड़ा को लेकर अकेलापन महसूस करती है। वह प्रिया करनीलिनी के परिवार के बारे में सोचती है- “कैसी होगी वह स्त्री शायद सुंदर अपने पति का गर्भ होगा, उसे उसका घर होगा साफ सुथरा सजाया घर, उसके बच्चे होंगे, उसे भी नलिन सपाठी मिल जाता तो, जीवन कितना अलग होता कितना भरा पूरा कितना सुखी होता।"

कहानी में विदेश में नौकरी करती अविवाहित श्यामला का चित्रण है। वह एक विवाहित सज्जन से अनैतिक संबंध रखती है, अपनी स्वतंत्रता को देने के डर से वह जीवन पर विवाह के बंधन से मुक्त रहना चाहती है। कहानी की नायिका को केवल एक लंबी अंधेरी रात से डर लगता है। वह कहती है, मैं बहुत कम चीजों से डरती हूं, ना रोक से ना गरीबों से ना ठंड से डरती हूं। बस एक लंबी अंधेरी रात के अकेलेपन से किसी और के साथ घर बसाकर सुख चैन से रह सके, पाकर भी वह विवाह नहीं कर पाती है। उसी प्रकार ’कातिल इच्छा’ ’दो अंधेरे’ ’कोई नहीं मछली’ आदि कहानियों में विवाह बंधन के कारण सामाजिक मूल्य विकसित हुए हैं।

माता पुत्री संबंध: सुरंग कहानी की मां अपने लड़के की मौत के दुख से इतनी टूट गई है, कि उसे अपनी लड़कियों का कोई ख्याल नहीं है। इस कारण मां और बेटियों के संबंध में अत्यंत पारस्परिक व्यक्ति आ जाती है, पर वह मानव होकर अजनबी बन गई है। अरुण को याद नहीं की नौ वर्षों में उन्होंने कभी अरुण के सर पर हाथ फेरा या पास आकर बैठी है। बेबी जब कभी रोकर उससे लिपट जाती है, तो वह उसे सिर्फ निर्मल हाथों से अलग कर देती है। कहानी में परिवारिकता, माता पुत्री के रिश्तों में बिखराव दिखाई देता हैं।

सामाजिक संबंध: ’कच्चे धागे’ कहानी में पड़ोसियों के संबंध और परिचय, रिश्ते नाते कच्चे धागे के समान है, जो सामाजिक मूल्य विघटन को चित्रित करते हैं। धनवान पड़ोसन जीजी झूठी कुशामद करके गरीब कुंतल से कम कर लेती है, परंतु जब कुंतल का रिश्ता उसके भाई से जोड़ने का प्रसंग आता है, तब उसका झूठापन सामने आ जाता है। क्योंकि वह इस रिश्ते को मना कर देती है। ’दृष्टि दोष’ कहानी सामाजिक संबंध विघटन, धन, वर्ग भेद की यथार्थ कहानी है। साधारण परिवार का सांभर अपने परिवार में एकमात्र उच्च पदाधिकारी है, जब उसकी पत्नी चंद्र के पिता उच्च पद के अधिकारी होने के साथ-साथ सारा परिवार उच्च स्तर का जीवन व्यतीत करता है। इस कारण चंद्र तथा उसकी मां शाम के परिवार को समझती है। यहां निम्न स्तर के तथा अपने लोगों को तुच्छ मानना संत पारिवारिकता इस सामाजिक मूल्य विघटन को दर्शाता है ।

उन्मुक्त प्रेम संबंध: 'मुंह बंद' कहानी में नीलू की सहेली अचला नीलू के घर आती है, और नीलू के पति राजन की और आकर्षित होती है। अचला और राजन पिकनिक का प्रोग्राम बनाते है। 'चांद चला रहा' कहानी की रोहिणी अविवाहित दशा में मित्रों साथी अक्षरों के साथ उन्मुक्त संबंध रखती है। 'सागर पार का संगी' कहानी में देवयानी उदासीन और अकेलेपन को भुलाने के लिए पति के छोटे भाई की और आकर्षित होती है। उससे उन्मुक्त यौन संबंध रखती है- "भाग कर आया याद पर कमरे की दिल्ली इस पर ठीक ठाक गया, अर्थ अनावृता देवयानी ने उसके गले में अधीर बेन डालकर अपनी और खींच लिया|"

'कितना बड़ा झूठा' कहानी की किरण दो लड़कियों की मां होते हुए भी मैक्स से अनैतिक संबंध रखती है| मैक्स भी किसी दूसरी लड़की वरिया से शादी कर लेता है| 'ट्रिप' कहानी में स्टीफन ने पत्नी को यौन संबंध रखने की स्वीकृति दे दी है| "वह अपने अफेयर चुपचाप कंडक्ट करेगी दूसरे इस आयु में नए बच्चों की जिम्मेदारी नहीं लेंगे इसका वह ध्यान रखेगी|"

इस प्रकार पूर्ति कांति ली, छह दो अंधेरे टूटे हुए प्रतिनिधि, मछलियां आदि कहानियों में भी उन्मुक्त प्रेम संबंधों के कारण सामाजिक विघटन हुए हैं| 'चांदनी में बर्फ पर' कहानी में हम से विदेशी पत्नी मेरी मालकिन पति को छोड़कर नए फ्रेंड के साथ चली जाती है|

टूटते आध्यात्मिक मूल्य: ज्ञान, श्रद्धा, भक्ति निषेध कम त्याग संतोष, आनंद, मोक्ष आध्यात्मिक ईश्वर से संबंधित आध्यात्मिक मूल्य अनुसंधान के लिए चुने गए कहानी संग्रह का अध्ययन करने से आध्यात्मिक मूल्य विघटन से प्रसंग प्राप्त नहीं हुए हैं| उसके शेष कहानी संग्रह में आध्यात्मिक मूल्यों के विघटन और दुष्परिणामों की ओर संकेत मिलते हैं| अनुसंधान में चुने गए उषा प्रियंवदा के 'जिंदगी और गुलाब फूल' एक कोई दूसरा कितना बड़ा झूठा कहानी संग्रह का अध्ययन करने से आध्यात्मिक मूल्य के विघटन प्रसंग प्राप्त होते हैं| आध्यात्मिक मूल्यों के वितरण की ओर, और उसके दुष्परिणामों की ओर संकेत किया गया है|

टूटते सौंदर्यात्म मूल्य: सौंदर्यात्मक मूल्य जीवन को सुंदर बनाते हैं, जो वस्तु मानव के मन मस्तिष्क को आनंदित करती है, उसे सौंदर्य की संज्ञा प्रदान की गई है| सौंदर्य का स्वरूप आंतरिक और बाह्य सामंजस्य है| वही बारिश सौंदर्य से आंतरिक सौंदर्य अधिक महत्व रखता है| डॉक्टर लालचंद गुप्त ने लिखा है-"उसकी कहानियों की दुनिया अपेक्षा के दुख से टेप की उपास साहित्य तथा जीवन की पीड़ा साहित्य और व्यक्ति स्तर पर अव्यवस्थित और मिश्रित होने का अनुभव करते नारी पुरुष पात्रों की है|" सत्यम, शिवम, सुंदरम, प्रेम त्याग, ममता, करुणा आदि सौंदर्य आत्मक मूल्य माने गए हैं| सत्यम ट्रिप दो कहानी में युद्ध का भयानक आतंक चित्रित किया

गया है| स्टीफन अमेरिका वियतनाम के युद्ध से लौटा है| युद्ध के भाई को वह नशीले पदार्थों के सेवन से भूलने का असफल प्रयास करता है| युद्ध और उसके परिणाम सत्य है| उसे नशीले पदार्थ द्वारा भूलना गलत है| 'सुरंग' कहानी की मां पर बेटे की मृत्यु का गहरा असर हुआ है| वह दुख से टूट गई है| उसे अपने लड़कियों का कोई ख्याल नहीं है| ममता के कारण वर्तमान को भूल गई है, तो उसके टूटे हुए कहानी में तत्री का बेटा विकलांग है|

सुंदरम पूर्ति कहानी में तारा अविवाहित पूर्व प्राध्यापिका है| ट्रिप कहानी में युद्ध के परिणामों को दर्शाया गया है| यदि मनुष्य के पास मां के सुंदरता होती तो, धरती पर युद्ध का नाम- निशान नहीं होता| प्रेम बंधन में अचला और विवेक का प्रेम संबंध स्थापित हुआ है| पूर्ति कहानी में तारा आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हुए भी प्रेम के अभाव से जीवन के अकेलेपन में वह भाव महसूस करती है| वह कहती हैकी- "मुझे तो कुछ भी ना मिला ना रूप न सुख ना लड़ना दुलार मां बाप ने उपेक्षा की दुनिया ने उपेक्षा की" 'वापसी' कहानी में गजानन बाबू रिटायर होकर घर से आते हैं, किंतु बेटे बहू और पत्नी को उनके साथ रुक व्यवहार देखकर उपेक्षा का भाव महसूस करते हैं| पत्नी भी उनके प्रेम को समझ नहीं पाती| गजाधर बाबू अकेलापन महसूस करते हैं| "किसी बात में हस्तक्षेप न करने का निश्चय के बाद भी उनका अस्तित्व उसे वातावरण का एक भाग न बन सका उनके उपस्थित उसे घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी, "जैसे सजी हुई बैठक में उनके चार पाई थी| उनकी सारी खुशी गहरी उदासीनता में डूब गई थी| 'कोई नहीं' यह एक सफल प्रेम की कहानी है| अमित और अक्षय में प्रगति प्रेम है| परंतु अक्षय के विदेश जाने के बाद नमिता उसे भूल जाती है| इस बात का कोई उसे अफसोस नहीं है| वह कहती है- नहीं अक्षय को अब मेरे से प्यार नहीं है| पिछले 7 वर्षों से जो भी हुआ जिंदगी में वह प्यार स्वीकार कर लिया है| अक्षय अभी भारत लौट कर दूसरे लड़की से शादी कर लेता है |नमिता के जीवन में केवल रोना, अंधेरा करवटें बदलना शेष रह जाता है| 'चांदनी में बर्फ पर' कहानी में हम को विदेशी पत्नी मेरी मालकिन अपने नए फ्रेंड के साथ चली जाती है| तो 'मछलियां' कहानी की बिजी प्रेम में सफल होने के कारण मुक्ति से प्रतिशोध लेती है ।

ममता: 'पैरामबुलेट' कहानी में कालिंदी एक व्रत कन्या को जन्म देती है| परंतु उसकी पीड़ा दुख ममता से उसके सास ननद को जरा साहैनुभूति नहीं होती है| "मेरे 10 बच्चों में 6 मर जाते रहे हैं| मैं तो ऐसा दुख कभी नहीं मनाया|"

'प्रतिद्वानिया' कहानी की वस्तु पति और बेटी को छोड़कर डॉक्टर जूलियन के साथ चली जाती है| वह बच्चों के जन्म को एक बायोलॉजी का घटना समझती है| यहां बेटी के प्रति ममता

को ठुकरा कर चले जाना इस सौंदर्यात्मक मूल्य का पतन है| तो 'सुरंग' कहानी के मां अपने लड़के की मौत से टूट गई है| "पर वे मैन नौकर अजनबी बन गई है| अरुण का याद नहीं है, कि 9 वर्षों में उन्होंने कभी अरुण के सर पर हाथ फेर है, या पास आकर बैठी है| बेबी जब कभी रोकर उनसे लिपट जाती है, तो उसे सिर्फ निर्मल हाथों से अलग कर देती थी"| 'करुणा ट्रिप' कहानी में युद्ध की भयानक आतंक चित्रित किया गया है| यदि सैनिकों के दिल में जरा भी करुणा होती तो युद्ध के भयानक परिणाम विश्व को ना भगत में पढ़ते हैं| उषा जी की कहानियों में सत्यम शिवम प्रेम करुणा त्याग ममता आदि सौंदर्य मूल्य का पतन होकर उनकी जगह चिंता कुंठा स्वाध्याय नाश्ता ने ले लिया है। पारिवारिक समर्पण का अभाव

'वापसी' कहानी के रिटायर गजानन बाबू की अपने परिवार के सदस्यों द्वारा अपेक्षा परख भावना उनके पारिवारिक त्याग समर्पण को भूल चुकी है| किंतु परिवार वाले यहां तक की पत्नी भी उनके प्रति अपनापन समय नहीं दिखलाता| बेटे बहु अपने जमकर की रखी है| गजानन बाबू को लगता है कि वह "जिंदगी द्वारा ठगे गए उन्होंने जो कुछ कहा उसमें से उन्हें एक बूंद भी ना मिली"

'जिंदगी और गुलाब के फूल' कहानी में बेकार भाई सुबोध के साथ बहन वृंदा का बर्ताव टूटे नैतिक मूल्यों की याद दिलाता है| वृंदा त्याग उदारता सेवा साक्षार्थ नैतिक मूल्य को भूल जाती है| भाई के प्रति साने कम हो जाता है| और उपेक्षा से मां कहती है- "काम ना धंधा तब भी दादा से यह नहीं होता है, कि ठीक वक्त पर खाना खा ले तुम कब तक जड़ों में बैठोगे उठ रख दो अपने आप खा लेंगे के आचरण में परिवार के प्रति समर्पण का भाव है"।

संदर्भ ग्रंथ

1. उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में सामाजिक चेतना- प्रा. पारेख नेहा

2. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में टूटते जीवन मूल्य- डा. अविनाश महाजन

3. उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य: समाजशास्त्रीय अध्यन- डा. मैंग्डालीन डिसुजा

4. स्त्री-विमर्ष और उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य-डा. लवीना निनाम.